लोग जंगल के अन्दर और जंगल के किनारे रह रहे हैं और खेती करते आ रहे हैं, आज उनको खेती करने से रोका जा रहा है। 1980 का वन संरक्षण कानून बनने के बाद जिन लोगों की ज़मीन पहले से आ रही थी उनको भी भगाया जा रहा है। मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि 1980 के वन संरक्षण कानून में संशोधन कर के जंगल के अन्दर और जंगल के किनारे पर जो हरिजन, आदिवासी और पिछड़े वर्गों के लोग रह रहे हैं, गरीब हैं, क्या उनको खेती के लिए फलदार पौधे लगाने के लिए वह ज़मीन आबंटित करेंगे?

श्री रामेश्वर ठाकुरः सभापति जी, हमारे इनवायर्नमेंट और फारेस्ट मंत्रालय की तरफ से ग्रामीण लोगों में इस तरह की ज़मीन के कंज़रवेशन और सुरक्षा के लिए, विकास के लिए, विस्तार से गाइडलाईन बनाई गई है और तदनुसार राज्य सरकारें अपने-अपने क्षेत्रों में जमीन के विकास के लिए कार्य कर रही है। मैं समझता हूं कि यही कानून वहां भी लागू है छोटा नागपुर और संथाल परगना के लिए और उसके मातहत उस तरह की जो जमीन है, उसकी एक प्रक्रिया है, उसके अनुसार राज्य सरकार को करना चाहिये।

श्री जनार्दन यादवः जिन लोगों की जंगल की ज़मीन हज़ारों वर्षों से है उनको भगाया जा रहा है **(व्यवधान)**

श्री वीरेन जे॰ शाहः उनको ज़मीन नहीं दे रहे हैं **(व्यवधान)**

श्री जनार्दन यादवः जो हज़ारों वर्षों से रह रहे हैं, उनको इस एक्ट के तहत बेदखल किया जा रहा है।

श्री रामेश्वर ठाकुरः जो एक्ट 1980 में बना है फारेस्ट कंज़रवेशन का, उसके अनुसार हमारे विभाग की तरफ से विस्तृत गाइडलाइंस इश्यु की गई है to regularise encroachment that had taken place prior to 25.10.1980. उस कानून के तहत एक तिथि निर्धारित है, उसके पूर्व जितनी भी जमीन इस तरह की है जिस पर लोगों ने दखल कर लिया था, कब्ज़ा कर लिया था, इनक्रोचमेंट हुआ था, उस जमीन के लिए विस्तार से गाइडलाइंस विभाग की तरफ से बनाई गई है और तदनुसार सभी राज्यों को यह सुझाव दिया गया है वहां इस तरह की कार्यवाही करें।

MR. CHAIRMAN: Question No. 442.

जम्मू और कश्मीर गये पर्यटकों की संख्या

*442. **श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेलः क्या नागर विमानन और पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) 1 जनवरी, 1994 से 30 जून, 1994 तक की अवधि के दौरान कुल कितने पर्यटक जम्मू और कश्मीर गये और उनमें से कितने भारतीय पर्यटक थे; और

(ख) उक्त अवधि के दौरान उनसे जम्मू और कश्मीर सरकार को कुल कितनी आय हुई?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती सुखबंस कौर): (क) राज्य सरकार से उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 1 जनवरी से 30 जून, 1994 के दौरान जम्मू और कश्मीर में आए पर्यटकों की कुल संख्या 1809062 थी जिनमें 1804555 स्वदेशी पर्यटक शामिल थे।

(ख) पर्यटकों द्वारा खर्च की जाने वाली राशियां, सेवाएं मुहैया कराने वालों द्वारा ली जाती हैं जो अधिकांशतः प्राइवेट क्षेत्र में हैं, न कि जम्मू और कश्मीर सरकार द्वारा।

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेलः सर, जम्मू और कश्मीर में पर्यटकों की संख्या कम हो गयी है। टूरिस्टों की संख्या कम होने से आमदनी कम हो गयी है और इस क्षेत्र का विकास रुका हुआ है। अभी 6 मास में 5540 पर्यटक वहां पहुंचे हैं। ऐसी स्थिति क्यों हो गयी। वह स्थिति दूर करने के लिए सरकार क्या कदम उठाना चाहती है और विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए क्या प्रभावी कदम उठाना चाहती है जिससे हमें विदेशी मुद्रा ज्यादा मिले और राज्य का विकास हो सके।

श्रीमती सुखबंस कौरः इसमें कोई शक नहीं है कि जम्मू और काश्मीर के हालात के कारण टूरिस्ट कम आ रहे हैं। उससे यह भी जाहिर है कि आमदनी कम आ रही है, फारेन एक्सचेंज कम आ रहा है। लेकिन हमने यह कोशिश की है—सरकार अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही है कि हालात वहां पर सुधरें और अभी हमने देखा है कि जो अमरनाथ यात्रा थी वह बहुत अच्छे तरीके से हुई, सफल हुई। यह इंडीकेशन है कि वहां के हालात में कुछ सुधार हो रहा है। जहां तक टूरिज्म का सवाल है हम अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि जो प्रोजेक्ट्स वहां थे उनको कंप्लीट करें और जहां अगर वैली में कुछ नहीं हो सकता तो स्टेट की दूसरी जगहों लद्दाख या जम्मू में ऐसे प्रोजेक्ट्स लाएं जिससे

टूरिस्ट भी आएं और फारेन एक्सचेंज भी आए।

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: It was a pointed question. What are the reasons? Why are the tourists not coming?

श्रीमती सुखबंस कौर: वहां की जो स्थिति है वह सब आप लोग जानते हैं। उसके क्या कारण मैं बताऊं वे भी आप जानते हैं...**(व्यवधान)**

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Sir, Ä..(*Interruptions*)

श्रीमती सुखबंस कौर: सर, मैंने आपको बताया है कि यह सही है कि कम आ रहे हैं और हम कोशिश कर रहे हैं। जैसे ही हालात अच्छे होंगे, टूरिस्ट्स आएंगे। हर टूरिस्ट यह चाहता है कि मैं उसी जगह पर जाऊं जहां मुझे सिक्योरिटी मिले, वह पीसफुली अपनी हालीडेज व्यतीत कर सके। यह आपको भी मालूम है कि क्या हालात हैं लेकिन हालात सुधरेंगे। हम कोशिश कर रहे हैं कि जो दूसरी स्टेट्स... **(व्यवधान)**

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: अभी अमरनाथ की यात्रा हुई है। उसमें लाखों की संख्या में तीर्थयात्री जाते थे, अब कम हो गए हैं... **(व्यवधान)**

MR. CHAIRMAN: Please ask your second question. Hon. Member, please ask your second supplementary.

श्रीमती आनन्दीबेन जेठाभाई पटेल: मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि हिमाचल प्रदेश और दक्षिण भारत में पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। क्या भारत सरकार पर्यटकों के लिए दूसरे स्थान विकसित करना चाहती है जैसे कि गुजरात में एक हजार किलोमीटर का कोस्टल एरिया है। इसमें वाटर स्पोर्ट्स और अन्य टूरिस्ट स्पाट्स विकसित करने के लिए सेंट्रल गवर्नमेंट कोई प्लान बनाना चाहती है? यदि हां तो कब प्लान बनेंगे यदि नहीं तो उसके क्या कारण हैं?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: This has nothing to do with Jammu and Kashmir.

श्रीमती सुखबंस कौर: सर सवाल का जो पहला भाग है उसमें मैं जवाब दूंगी, दूसरे का भी थोड़ा-सा देती हूं लेकिन वह इसके साथ ताल्लुक नहीं रखता—जम्मू काश्मीर के साथ। जम्मू काश्मीर में पर्यटक कम जा रहे हैं इसलिए हमने यह कोशिश की है—क्योंकि जो डिपार्टमेंट आफ टूरिज्म है वह सारे देश के लिए काम करता है और कोशिश करता है कि सारे देश में टूरिस्ट्स आएं। हमने हिमाचल में भी बहुत-सी जगहें ली हैं। अगर आप चाहेंगी तो मैं अलग से भेज दूंगी। जहां तक गुजरात का सवाल है यह स्टेट सब्जेक्ट है और जो भी स्टेट्स हमें प्रोपोजल्स भेजती है—यह मैं आपको एश्योर करना चाहती हूं कि जितने भी प्रोपोजल्स हमें गुजरात की स्टेट भेजेगी हम जो भी असिस्टेंस दे सकते हैं जैसा कि हम करते हैं, फाइनेंशियल असिस्टेंस देते हैं वह जरूर देंगे और कोशिश करेंगे कि गुजरात में भी टूरिज्म बढ़े।

THE MINISTER OF CIVIL AVIATION AND TOURISM (SHRI GHULAM NABI AZAD): Mr. Chairman, Sir, I would like to make one thing very clear. In the case of Kashmir, thing have improved, as far as tourism is concerned. We can see this when we compare the figures for 1992 and 1993 with those for 1990 and 1991. I would like to give the figures here.

In 1991, 4,800 tourists visited Kashmir. I am talking about the Valley. I am not talking about the Jammu region. I am talking about the Kashmir Valley. In 1992, more than 9,000 tourists visited Kashmir. Thus, there was an increase of about 5,000. In 1993, more than 8,000 tourists visited Kashmir. Therefore, the situation now is not as bad as it was in 1990 and 1991. I would also like to point out here that compared to 1990 and 1991, the number of foreign tourists has doubled. It is not only Srinagar and the Valley. That can also be compared with Ladakh. In Ladakh, in 1990 the arrival of tourists from foreign countries was about 6,000, and last year this went up to 13,000. So, things are improving and foreign tourists are going to the Valley and Ladakh.

MR. CHAIRMAN: Shri Gaya Singh...(*Interruptions*)..Ä

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: Sir, I have a technical question. This mike system is not working properly. I am not able to hear properly. When Mr. Azad was speaking, his voice was coming clearly, but when somebody speaks from behind, nobody can hear. I have been seeing this for the

last ten days, that those who speak from the backside are not heard properly. I think the monitoring system is not good.

MR. CHAIRMAN: I will have it checked.

SHRI VIREN J. SHAH: Better change this system.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: You change the system.

MR. CHAIRMAN: We are introducing a new system. ...*(Interruptions)*...

SHRI M.A. BABY: We want to change the entire system here, not only this mike system! ...*(Interruptions)*... We want a fundamental change in the system, Sir.

MR. CHAIRMAN: But I can hear you. Please allow the Member to speak. More than the mike system, it is the other people's noise which prevent people from hearing.

श्री गया सिंह: माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि अभी जो उन्होंने जवाब दिया है इससे ऐसा लगता है कि श्रीनगर में विदेशी आगन्तुकों की संख्या 1991 के बाद से बढ़ी है, मैं उनसे जानना चाहता हूं कि पिछले 10-12 साल से जो वहां की स्थिति है और उसके पहले न केवल विदेशी बल्कि देशी पर्यटक भी जनवरी से जून तक लाखों की संख्या में जाते थे। जिसके चलते श्रीनगर के अगल-बगल के खासतौर से गरीब, मझौले दुकानदार, छोटे-छोटे सामान बनाने वाले हजारों लोगों का रोज़गार था, मैं आपसे जानना चाहता हूं कि अभी वे काफी संख्या में लोग या तो बेरोज़गार हो गए हैं या उनकी दुकानें बंद हो रही है, उसके लिए सरकार ने कोई उनका उपाय या विकल्प ढूंढा है या ढूंढने की कोशिश करेंगे?

श्रीमती सुखबंस कौर: यह सही है कि बहुत से लोग जो टूरिज्म इंडस्ट्री में काम करते थे उन पर असर पड़ा हुआ है और यह जो सब लोग हैं, मैं उनको बताना चाहती हूं कि हाउस बोट्स थे जो लोग उन पर काम करते थे वे यूनिट्स थे। 1,285 होटल हैं, रेस्टोरेंट हैं, ढाबाज़ हैं, गेस्ट हाउसेज़ हैं, टैक्सी शिकाराज़ थे, मोटर बोट्स, ट्रेवल्स एजेंट्स, फोटोग्राफर्स एंड हाकर्स ये सब लोग थे। जहां तक उनके रीहैबिलिटेशन का सवाल है, इसका सेपेरेट क्वश्चन आपको होम मिनिस्ट्री में देना पड़ेगा।

DR. NAUNIHAL SINGH: Sir, I would like to know from the Minister the number of foreign and Indian tourists who have been killed by militants in Jammu & Kashmir during the last three years and, if possible, during the last 10 years, and also how much compensation has been given to the near and dear ones of each such victim.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, this is a question which he should put to the Home Ministry, because we do not keep these figures.

DR. NAUNIHAL SINGH: It is about tourists.

SHRI GHULAM NABI AZAD: We are talking about tourists, but this is not related to the Ministry of Tourism. We do not have this information and so we cannot give this information to the hon. Member.

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, as far as Kashmir is concerned, the hon. Minister has said that the tourist inflow has increased. The hon. Minister knows it fully well that a lot of Indian tourists go there, apart from the foreign tourists. But I find that there is a discrimination on the part of the Ministry of Tourism at the Centre as also the various Departments of the State, in that they are trying to pamper only the foreign tourists. When Indian tourists go there, they are not giving them the same facilities and concessions which they are giving to the foreign tourists. In their anxiety to get more foreign exchange, they are trying to give a lot of concessions to foreign tourists, ignoring Indian tourists. The tourists to Jammu are in thousands—the hon. Minister knows it—because pilgrims go to Vaishno Devi and various other places. Therefore, Sir, I would like to know from the hon. Minister whether they will

treat the Indian tourists also as equals to foreign tourists when they give concessions and facilities.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, there is no question of any concession. Tourism is in the private sector. They board the aircraft. They live in private hotels. They take ponies. They take taxis. So, on the part of the Government there is no question of pampering "A" section of tourist and not taking care of "B" section of tourists. Had it been true, there would not have been an increase of tourists to Jammu. Domestic tourists have gone up very close to 4 million in the past three to four years. From 1.5 million it has gone up to almost 4 million to Vaishno Deviji. The Government, on its part, is providing all the facilities where it should. That means good roads, air services, train services etc. There is a tremendous increase in the number of trains from all over the country to Jammu. In place of one flight, three airlines are operating to Jammu. So, I don't think there is any problem to that extent.

मेलों के लिए अनुदान का प्रावधान

*443. **श्री महेश्वर सिंह:** क्या नागर विमानन और पर्यटन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि पूर्वोत्तर राज्यों, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में इस प्रकार के अनेक धार्मिक एवं अन्य पर्यटन स्थल हैं जो प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं;

(ख) यदि हां, तो वे कौन-कौन से तीर्थ स्थल, धार्मिक उत्सव एवं अन्य पर्यटन स्थल हैं;

(ग) सरकार ने उनके विकास हेतु कौन-कौन सी योजनायें बनायी हैं; और

(घ) वे कौन-कौन से मेले है जिनके लिये सरकार अनुदान देती है और वह भविष्य में कौन-कौन से मेलों के लिये अनुदान देने पर विचार कर रही है?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्रालय में राज्यमंत्री (श्रीमती सुखबंस कौर): एक विवरण-पत्र सभा-पटल पर रखा गया है।

विवरण

पूर्वोत्तर राज्यो, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में मुख्य पर्यटक स्थानों में शामिल हैं—ईटानगर, काजीरंगा, मानस, गुवाहाटी, हाफलोंग, शिबसागर, जोरहाट, इम्फाल, शिलांग, तुरा, ऐजवाल, कोहिमा, दीमापुर, अगरतला, मसूरी, नैनीताल, रानीखेत, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, औली, नरेन्द्र नगर, कुल्लु, मनाली, शिमला, कांगड़ा, डलहौजी, केलोंग, सोलोंग नाला, धर्मशाला आदि।

इन क्षेत्रों में संवर्धन के लिए अभिनिर्धारित मेले और उत्सव हैं—मिजोरम में चपचारकुट उत्सव, मणिपुर में कुट उत्सव, मेघालय में नोनग्रेन नृत्य उत्सव, नागालैण्ड में शरत् उत्सव और हिमाचल प्रदेश में शिमला ग्रीष्म उत्सव, कुल्लू-दशहरा उत्सव, कांगड़ा घाटी/चाय उत्सव, चम्बा मिंजोर उत्सव और लावी मेला, ऋषिकेश में योग उत्सव, असम में चाय उत्सव, आदि।

अलग-अलग राज्य सरकारों से प्राप्त विशिष्ट प्रस्तावों के आधार पर, पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए और मेलों व उत्सव के संवर्धन के लिए केन्द्रीय सरकार वित्तीय सहायता देती है।

श्री महेश्वर सिंह: सभापति महोदय, सर्वप्रथम मैं अपने मूल प्रश्न और जो उसका उत्तर है, उसकी ओर आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। महोदय, प्रश्न के "ग" भाग में और "घ" भाग में मैंने जानना चाहा था कि, "सरकार ने उनके विकास हेतु कौन-कौन सी योजनायें बनायी हैं और वे कौन-कौन से मेले हैं जिनके लिए सरकार अनुदान देती रही है और वह भविष्य में कौन-कौन से मेलों के लिए अनुदान देगी" और आपका जो उत्तर है, उसके अनुच्छेद-2 और 3 में यह कहा गया है कि, "इन क्षेत्रों में संवर्धन के लिए अभि-निर्धारित मेले और उत्सव हैं—मिजोरम में चपचारकुट उत्सव, मणिपुर में कुट उत्सव, मेघालय में नोनग्रेन नृत्य उत्सव, नागालैंड में शरत उत्सव और हिमाचल प्रदेश में शिमला ग्रीष्म उत्सव, कुल्लू-दशहरा उत्सव, कांगड़ा घाटी चाय उत्सव, चम्बा मिंजोर उत्सव और लावी मेला, ऋषिकेश में योग उत्सव, असम में चाय उत्सव आदि।" अलग-अलग राज्य सरकारों से प्राप्त विशिष्ट